DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Barachakia
BRABU — Muzaffarpur

B.A. (Hon.) Part — I
Subject — SANSKRIT
Paper — I
कारक सूत्र-व्याख्या
(तृतीया विभक्ति)

5X3 = 15 Marks

12. सहयुक्तेऽप्रधाने (सहार्थे तृतीया) (2/3/19)

'साथ' अर्थवाले सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि शब्दों के योग में जो अप्रधान होता है, उसमें तृतीया होती है। यथा- पुत्रेण सह आगतः पिता (पिता पुत्र के साथ आया) — यहाँ 'आना' क्रिया के साथ पिता का सम्बन्ध प्रधानता से है और पुत्र उस क्रिया के सम्पादन में अप्रधान है, अतः उसमें 'सहयुक्तेऽप्रधाने' सूत्र से तृतीया हुई। पुनश्च — भ्रात्रा साकम्, सार्धम्, समं वा विवादो न कर्तव्यः। यहाँ भी साकम्, सार्धम् एवं समम् शब्दों के योग में 'सहयुक्तेऽप्रधाने' से तृतीया हुई है।

13. येनाङ्गविकारः (2/3/20)

जिस अंग के विकार (विकृति) से उस अंगवाले व्यक्ति की विरूपता सूचित हो, उस अंगवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। यथा — अक्ष्णा काणः — वह आँख से काना है अर्थात आँख सम्बन्धी काणत्व के विकार से युक्त है — यहाँ अक्षि (आँख) अंग के विकृत होने पर अंगी का काणत्व विकार लक्षित होता है, अतः उस अंग 'अक्षि' में 'येनाङ्गविकारः' सूत्र से तृतीया हुई है।

———— o ————

क्रमशः जारी